व्यक्तिवाद

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

व्यक्तिवाद

व्यक्तिवाद पुनर्जागरण और धार्मिक सुधार आंदोलनों का परिणाम है 14वीं 15वीं शताब्दी में जो पुनर्जागरण यूरोप में आया उसके कारण वैयक्तिक चेतना और वैज्ञानिक चेतना का विस्तार हुआ । वैज्ञानिक चेतना के विस्तार के कारण लोगों ने आस्था और श्रद्धा की बजाय तर्क के आधार पर सोचना शुरू किया वैज्ञानिक जिसने व्यक्ति को समूह के बंधनों से मुक्त किया और व्यक्ति ही समस्त प्रकार के चिंतन का आधार बन गया । राजनीति में उसकी प्रथ**म अभिव्यक्ति सर हाब्स की रचना लेवियाथन में होती है । थामस हाब्स को व्यक्तिवाद का जनक माना जाता है ।** क्योंकि हाब्स ने पहली बार व्यक्ति को राज्य के केंद्र में रखा। हाब्स ने राज्य की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धांत का खंडन किया और एक काल्पनिक समझौते के द्वारा यह बताने की कोशिश की कि राजा के अपरिमित अधिकार वास्तव में व्यक्तियों के अधिकार हैं जो उन्होंने समझौते द्वारा राजा को सौंप दिए हैं । इस प्रकार पहली बार राज्य के निर्माण में व्यक्ति केंद्रीय भूमिका में आ गया । राजनीतिक चिंतन में यह व्यक्तिवाद की औपचारिक शुरुआत है । हाब्स के बाद के राजनीतिक दार्शनिकों में यह व्यक्तिवादी चिंतन और अधिक पुष्ट और मजबूत हुआ **जॉन लॉक , स्पेंसर , बेंथम, मिल** आदि अनेक नाम आते हैं ।

15 मई 16 मई शताब्दी से लेकर आज तक व्यक्तिवाद उदारवादी चिंतन का आधार बना हुआ है लेकिन प्रारंभिक व्यक्तिवाद से आधुनिक व्यक्तिवाद तक इसमें विकास के कई उत्तर आते हैं जिसके आधार पर इसे नकारात्मक व्यक्तिवाद और सकारात्मक व्यक्तिवाद या प्रारंभिक शास्त्री व्यक्तिवाद और नया आधुनिक व्यक्तिवाद आदि के रूप में व्याख्यान किया जाता है ।

DR SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

मूल मान्यताएं

जीवन

सम्पत्ति

स्वतंत्रता

आर्थिक स्वतंत्रता

1- प्रारम्भिक या शास्त्रीय व्यक्तिवाद

1- प्राथमिक व्यक्ति बात को नकारात्मक व्यक्तिवाद भी कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्रता पर किसी भी प्रकार के प्रतिबंध का विरोध करता है ।

2-हाब्स के चिंतन में यद्यपि व्यक्तिवाद अपने प्रारंभिक रूप में है और हाब्स ने व्यक्ति के सारे अधिकार समझौते द्वारा राजा को सौंप दिए थे क्योंकि वह संसद और राजा के संघर्ष में राजा के साथ था ।

3-लेकिन हाब्स के चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह पहली बार व्यक्ति के जीवित रहने के अधिकार को सर्वोच्च और सर्वोपरि घोषित करता है ।

4-क्योंकि यदि असीम अधिकारों वाला निस्सीम संप्रभु लेवियाथन व्यक्ति के जीवित रहने के अधिकार पर आक्रमण कर दे तो व्यक्ति को राज्य के प्रति विद्रोह करने का अधिकार है ।

5- यह जीवन के अधिकार की पहली औपचारिक और महान घोषणा थी ।

6- जान लाक के राजनीतिक दर्शन में व्यक्तिवाद लगभग अपनी पूर्ण अवस्था को प्राप्त करता है । लॉक ने जीवन संपत्ति को स्वतंत्रता के अधिकार को प्राकृतिक और पवित्र अधिकार घोषित किया ।

7- और यह कहा कि राज्य का जन्म ही इन अधिकारों की रक्षा के लिए हुआ है इसलिए राज्य एक मालिक नहीं बल्कि एक ट्रस्ट और न्यास है तथा यह न्यास तभी तक बना रहता है जब तक वह अपने उद्देश्य अर्थात जीवन संपत्ति और स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा करता है ।

8- जान लाक के बाद जॉन स्टूअर्ट मिल ने व्यक्तिवाद और और अधिक ऊंचाईयो तक पहुंचाया । मिल का महान कथन है कि " व्यक्ति अपने शरीर और अपनी आत्मा पर संप्रभु है " । इस कथन के द्वारा जॉन स्टूअर्ट मिल के दर्शन व्यक्तिवाद राजनीतिक के साथ-साथ आर्थिक व्यक्तिवादी बन जाता है ।

9- क्योंकि मिलने व्यक्ति के विचार अभिव्यक्ति और उसके कार्य करने की स्वतंत्रता पर राज्य के किसी भी प्रकार के प्रतिबंध का विरोध किया ।

10- कालांतर में व्यक्ति के काम करने अर्थात उसके व्यापार करने और आर्थिक अधिकारों की घोषणा ने पूंजीवाद का मार्ग प्रशस्त किया अतः यूरोप में पूंजीवाद व्यक्तिवाद के साथ-साथ परिपक्व होता है ।

इस प्रकार प्रारंभिक विवाद जीवन संपत्ति और स्वतंत्रता के के इर्द-गिर्द घूमता है और इन तीन अधिकारों को बहुत ही अधिक महत्व दिया जाता है व्यक्ति के आर्थिक अधिकार अर्थात उसके व्यापार करने के अधिकार ₹से राज्य को दूर रखा जाता है परिणाम स्वरूप **यदभाव्यम्** की नीति व्यक्तिवाद और पूंजीवाद दोनों का आधार बन गई जिसे आर्थिक क्षेत्र में एडम स्मिथ ने आगे बढ़ाया और आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिवाद के सबसे बड़े उद्घोषक बने ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

2- आधुनिक, समकालीन या नव व्यक्तिवाद

समानता

न्याय

आर्थिक विषमताओं का समायोजन

लोक कल्याण

19वीं शताब्दी तक आते-आते व्यक्तिवाद और पूंजीवाद दोनों के दोष उजागर होने लग गए ।

2- व्यक्ति के कार्यों और विचार पर प्रतिबंध न लगाने की मांग ने एक ऐसी प्रतियोगिता शुरू कर दी जिसमें साधन संपन्न और योग्य लोग बहुत आगे चले गए और साधन विहीन और अपेक्षाकृत कमजोर लोग बहुत पीछे छूट गए ।

3- परिणाम स्वरूप समाज में विषमता है बहुत अधिक बढ़ गई औद्योगिकरण ने समाज में अमीर गरीब की खाई बहुत बड़ा दी । औद्योगिकरण ने एक और नई चीज पैदा की जिसने पूरे विश्व को जहां जोड़ा वहीं शोषण को भी आगे बढ़ाया , वह था उपनिवेशवाद ।

4- औद्योगिकरण के कारण यूरोप में जो अत्यधिक उत्पादन प्रारंभ हुआ उसको बेचने के लिए नए बाजारों की खोज हुई और यूरोप की कीमा शक्तियों ने पूरी दुनिया को अपना उपनिवेश बना लिया ।

5- इन सब कारणों से व्यक्तिवाद के राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांत पर पुनर्विचार की आवश्यकता होने लगी क्योंकि गरीब अधिक गरीब हो रहे थे और अमीर अधिक अभी हो रहे थे और व्यक्तिवाद वास्तव में मुट्ठी भर लोगों का विशेषाधिकार बंद करके रह गया था ।

6- ऐसे में यह संभव नहीं था कि राजनीतिक मनीषियों और दार्शनिकों के विचारों को इस प्रकार की समस्याएं प्रभावित ना करें बहुत जल्दी ही व्यक्तिवाद के इन दोषों को दूर करने के लिए राजनीतिक चिंतकों का राजनीतिक चिंतकों का एक पूरा समूह सामने आ गया जिसकी अगुवाई टॉमस हिल ग्रीन ने की ।

7- ग्रीन ने पहली बार इस बात की मांग की कि व्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रकार के प्रतिबंध होने चाहिए उसका महेश मशहूर कथन है कि जिस प्रकार सुंदरता कुरूपता का अभाव नहीं है उसी प्रकार स्वतंत्रता प्रतिबंधों का अभाव नहीं है स्वतंत्रता पर अनुच्छेद प्रकार के प्रतिबंधों की वजह उचित प्रकार के प्रतिबंध होने चाहिए ।

8- अतः व्यक्ति के नैतिक स्वतंत्रता की जिम्मेदारी युवा राज्य को देता है

9- और ऐसी बात का आदर्शवादी प्रतिकार प्रारंभ होता है ग्रीन ने जो समस्याएं उठाई और जो तर्क दिए उसने व्यक्तिवाद में सुधार की बजाय आदर्शवाद का नया दर्शन खड़ा कर दिया ।

10- व्यक्तिवाद में सुधार के वास्तविक प्रयास 19वीं शताब्दी के अंत से प्रारंभ हुए और बीसवीं शताब्दी में इस पर काफी विचार हुआ नॉर्मल एंजेल , ग्राम वालास , सी बी मैक्फर्सन और नवीन चिंतकों की पूरी जमात सामने आई जिसने पूंजीवाद और व्यक्तिवाद की आर्थिक - सामाजिक विषमताओं को स्वतत्रंता के साथ समायोजित करने की कोशिश की ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

11- अतः जो व्यक्तिवाद केवल स्वतंत्रता की बात करता था अब अब उसके साथ समानता और न्याय की भी बात की जाने लगी ,और यह कहा जाने लगा कि समानता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है ।

12- अतः स्वतंत्रता और समानता परस्पर पूरक बन गए । ।

13- लेकिन स्वता समानता का मूल विचार ही स्वतंत्रता के विरुद्ध जाता था अतः समानता और स्वतंत्रता में संतुलन बिठाने की कोशिश की गई और यह संतुलन न्याय के माध्यम से बिठाया गया ।

14- न्याय की क्या विचार यद्यपि बहुत पुराना था किंतु इसकी आधुनिक व्यक्तिवादी व्याख्या की गई जिसमें सीबी में फरसन जॉन रॉल्स वाल्जर आदि के नाम प्रमुख है ।

15- इन्होंने यह बताने की कोशिश की कि समाज को बेशक नया पूर्ण होना चाहिए लेकिन न्याय का अर्थ व्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध नहीं है ।

16- जान राल्स ने यह बताने का प्रयत्न किया कि एक प्रतियोगी राज्य में आर्थिक विषमता स्वाभाविक हैं किंतु इन आर्थिक विषमताओं के बाद भी समाज न्याय पूर्ण हो सकता है यदि इन आर्थिक विषमताओं से समाज के अधिकांश लोगों को लाभ हो ।

निष्कर्ष

इस प्रकार समकालीन व्यक्तिवाद जिसे नव व्यक्तिवाद व्यक्ति के राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता के साथ समानता और न्याय को समायोजित करने का प्रयत्न करता है । और आर्थिक विषमताओं को न्यूनतम करके समाज को न्यायपूर्ण बनाने का प्रयत्न करता है । इस प्रकार समकालीन व्यक्तिवाद वैयक्तिक अधिकारों और समाज की अपेक्षाओं दोनों में संतुलन बिठाने का प्रश्न करता है । यह आर्थिक विषमताओं को न्याय पूर्ण बनाकर व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करता है अतः समकालीन व्यक्तिवाद स्वतंत्रता के साथ समानता और न्याय की अवधारणाओं के साथ चलता है ।

गृह कार्य

1- व्यक्तिवाद के प्रमुख मूल्य बताइए ।

2- नकारात्मक और सकारात्मक व्यक्तिवाद की समीक्षा कीजिए ।

संदर्भ

आन लाइन रिसोर्स

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

https://www.britannica.com/topic/individualism

https://www.encyclopedia.com/history/united-states-and-canada/us-history/individualism

DR. SHAKEEL HUSAIN

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE